8 SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XV/VII (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/19(N-M, J-S)–HL-**HL15/7**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

हाँ	✓	नहीं	

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07/09/19 – 7

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

1	1	1	1	7	6	2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ

प्राचीन आर्यभाषाओं से आधुनिक हिन्दी से प्रवासन के मार्ग में मध्यकालीन आर्यभाषाओं में अपभ्रंश का विकास हुआ। इसका प्रमुख उदाहरण निम्न है-

"ए जिम्म नग्गुअ गिऊ, भड सिरि खग्ग न भुग्गु
तिक्खा तुरीय ण माणिया, गौरी गले न लग्गु।"

व्याकरणिक विशेषताएँ

① संज्ञा व कारक व्यवस्था

- विभक्तियों (संस्कृत) के स्थान पर परसर्गों का प्रयोग। (वियोगात्मक भाषा)
- सभी ~~स्वर~~ शब्द, स्वरांत फिर अकरांत।
- संबंध कारक में 'का' परसर्ग का विकास।

② क्रिया व्यवस्था :-

- कृदंत क्रियाओं का विकास हुआ
  उदा०- बोलत, चखत आदि।
- प्रेरणार्थक क्रियाएँ वर्तमान की पूर्व

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी से मिलती हैं। जैसे - बैठाव, पढाव।

③ लिंग व्यवस्था :- संस्कृत के तीन लिंगों के बजाय केवल 2 ही लिंगों का प्रयोग।
- नपुसकलिंग नहीं रहा।

④ वचन व्यवस्था
- दो ही वचन शेष बचे।
- द्विवचन का लोप।

⑤ सर्वनाम व्यवस्था :- मई, म्हार, तुहार जैसे सर्वनामों का विकास।

⑥ विशेषण व्यवस्था के स्तर पर वर्तमान को संख्यावाचक विशेषणों का विकास। जैसे - एक, आठ आदि।

अत: व्याकरणिक दृष्टि से आधुनिक हिन्दी के बीज अपभ्रंश में दिखाई पड़ते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

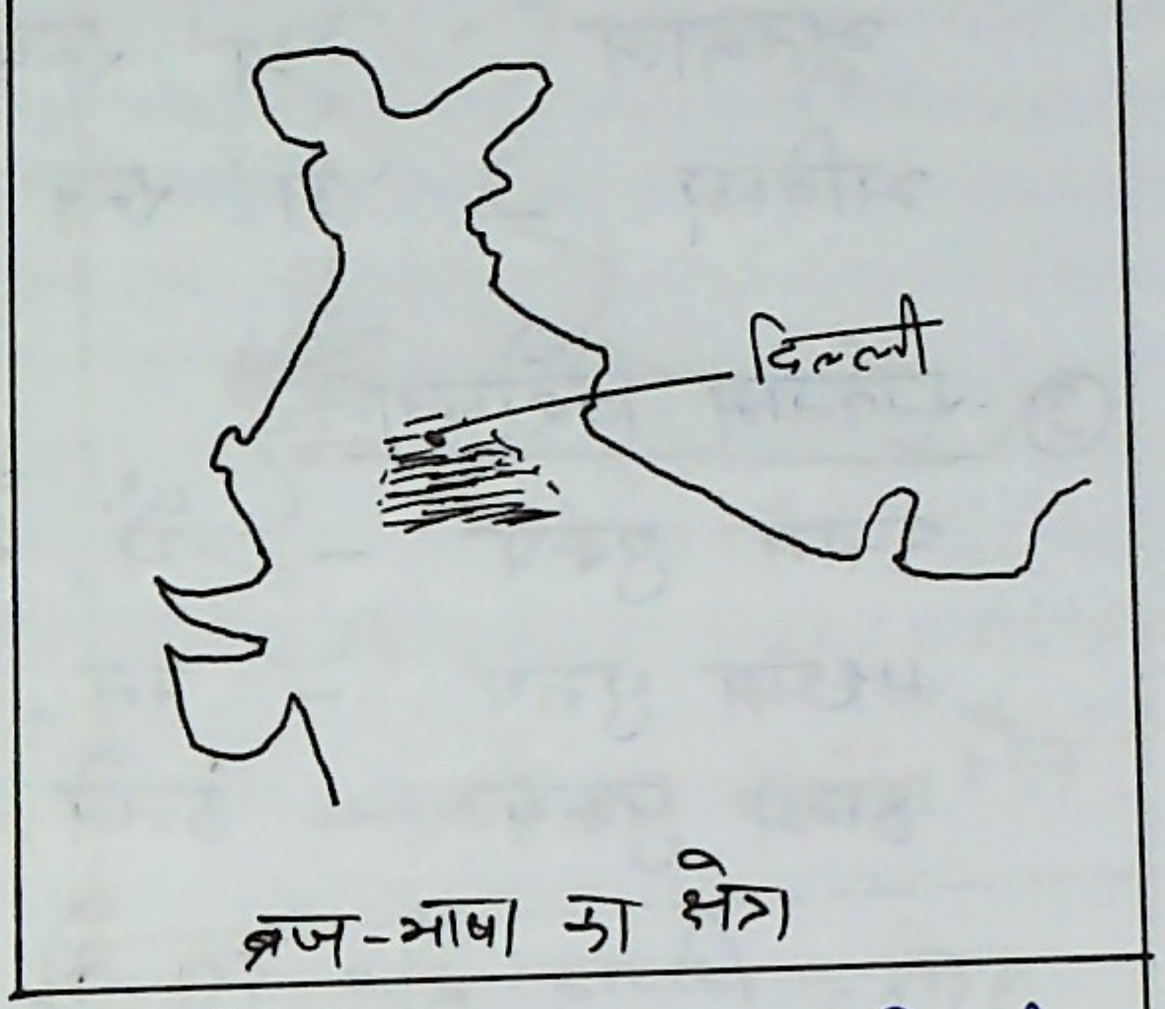

(ख) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

शौरसेनी प्राकृत
↓
शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी उपभाषा
↓
ब्रजभाषा

ब्रज-भाषा का क्षेत्र

प्रसुप्ति का क्षेत्र - ब्रजमण्डल का क्षेत्र - दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि जिले।

व्याकरणिक विशेषताएँ

① कारक व्यवस्था

कर्ता – कोई परसर्ग नहीं
कर्म - कूँ, कू, को
करण - सें, तें, सेंति
संप्रदान –
अपादान - सें, तें, सेंति आदि।

② क्रिया व्यवस्था :- क्रिया में प्रमुख कालों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में ध्वनि व्यवस्था -
वर्तमानकाल - 'त' रूप = 'करत'
भूतकाल - 'अ' रूप = 'चल्यौ'
भविष्य - 'ग' रूप - करैगो।

③ सर्वनाम विशेषता
उत्तम पुरुष - मैं, मोंहि, मेरो
मध्यम पुरुष - तम, तोहि
अन्य पुरुष - उनने, वाकी
उ०- निर्गुन कौन देस को वासी।

④ वचन व्यवस्था :- 'न', 'न्ह' ~~प्रत्यय~~ प्रत्ययों का प्रयोग - लरिका - लरिकन

⑤ लिंग व्यवस्था :- इ, इया, आइन, ई आदि प्रत्ययों का प्रयोग
- बिटिया, रीति, ठकुराइन आदि।

इस प्रकार व्याकरण के स्तर पर ब्रज भी पर्याप्त वैज्ञानिकता का परिचय देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मारवाड़ी' बोली

राजस्थानी प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓
राजस्थानी हिन्दी उपभाषा
↓
मारवाड़ी बोली

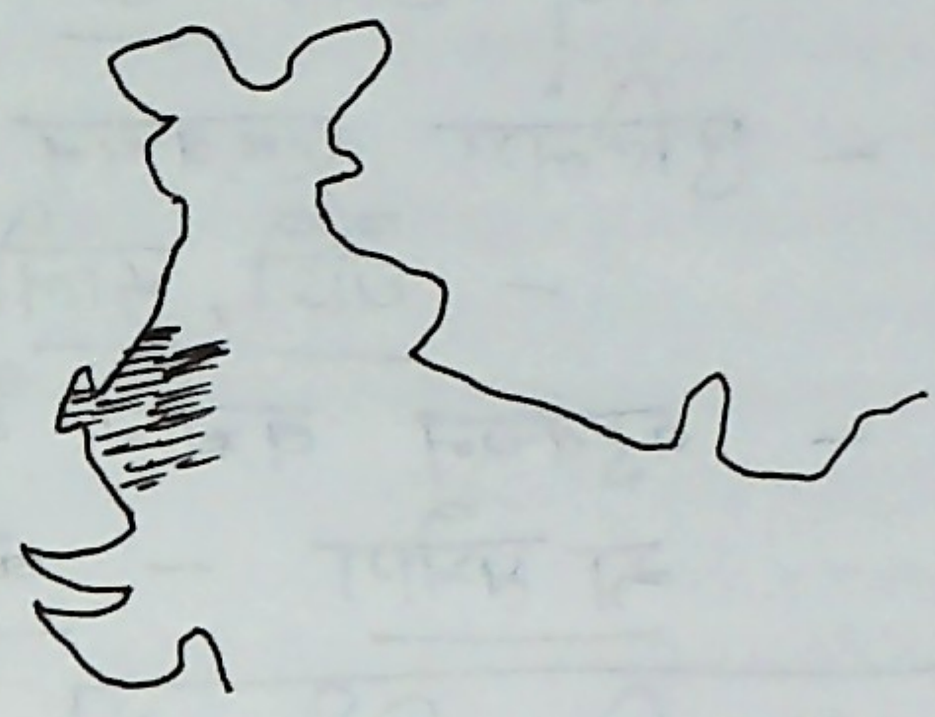

मारवाड़ी का प्रयुक्ति क्षेत्र

प्रयुक्ति क्षेत्र : पश्चिमी राजस्थान व उत्तरी राजस्थान का कुछ भाग। इसके प्रयोक्ताओं की संख्या काफी अधिक है। साहित्य के स्तर पर भी यह काफी समृद्ध बोली है। इसमें सूर्यमल्ल मिश्रण, मुहणौत नैणसी, मीराबाई ने रचनाएँ की है। उदाहरण -

"इला न देणी आपणी, हालरिये हुलराय
पूत सिखावे पालणै, मरण बड़ाई मांय।"

ध्वनिगत विशेषताएँ

- 'ट' वर्ग बहुला भाषा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

- 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग।
- मराठी ध्वनि 'ळ' की प्रचुरता।
- पुल्लिंग एकवचन ओकरांत।
  - घोड़ो, कालो।
- बहुवचन बनाने के लिये 'आँ' प्रत्यय का प्रयोग - बाताँ, ताराँ आदि।

व्याकरणिक विशेषताएँ

कारक व्यवस्था
कर्ता - निर्विभक्तिक
कर्म - नै, सूँ का प्रयोग।

सर्वनाम :- मनै, थानै, उण।

क्रिया - संज्ञार्थ क्रियाओं में 'ण' वर्ण से अन्त - जाण, करण आदि।

अतः यह बोली अपनी विशेषताओं व प्रवृत्ति के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण बोली हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'भोजपुरी' का साहित्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

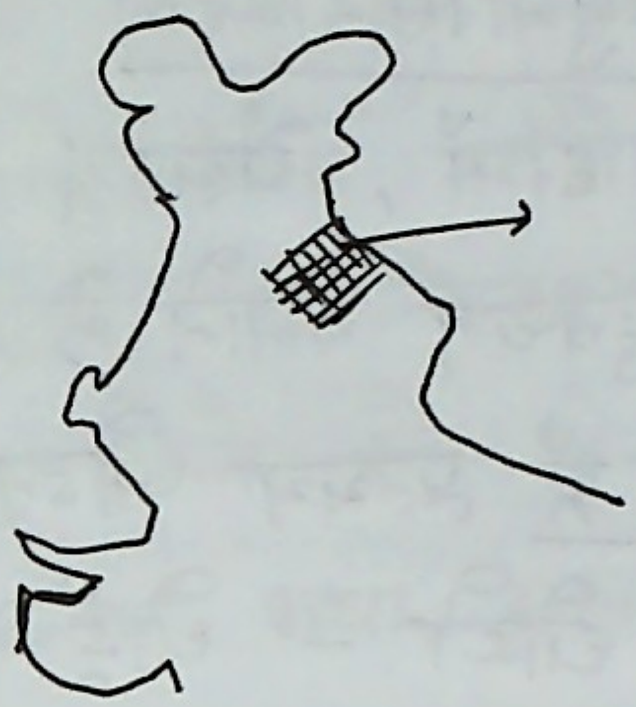

(ङ) 'गढ़वाली' बोली

खस प्राकृत
↓
खस अपभ्रंश
↓
पहाड़ी हिन्दी उपभाषा
↓
गढ़वाली बोली

गढ़वाली का प्रयुक्ति क्षेत्र

इसका प्रयुक्ति क्षेत्र हिमाचल व उत्तराखंड के ~~[illegible]~~ क्षेत्र हैं जिसमें नैनीताल, अल्मोड़ा व पिथौरागढ़ जिले प्रमुख है। इस बोली पर प्रारंभ में इंडो-चीनी व तिब्बती भाषाओं का प्रभाव पड़ा था किन्तु शनै-शनै यह प्रभाव कम हुआ व भारतीय भाषाओं यथा राजस्थानी, ब्रजभाषा का प्रभाव बढ़ गया।

ध्वनिगत विशेषताएँ

① महाप्राण का अल्पप्राणीकरण –

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हाथ - हात , मुझे - मुजे

② आनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति जैसे -
हाथों, पैसा।

③ बहुवचन बनाने के लिये पुल्लिंग एकवचन में ऊँ प्रत्यय जोड़ा जाना।
घोड़ो - घोड़ूँ।

व्याकरणिक विशेषताएँ

- क्रिया :- भूतकाल क्रियाएँ ब्रज की प्रकृति पर जैसे - चल्यौ, खायो।
- सर्वनामों के स्तर पर भारतीय भाषाओं का प्रभाव।
- कारक व्यवस्था
  - कर्ता - ने, ले।
  - कर्म - कणि।

अतः पहाड़ी हिन्दी भी अपनी विशेषताओं के द्वारा भारतीय भाषायी विविधता में अपना योगदान देती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की विकासयात्रा का उद्भव भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से शुरू होता है। भारतीय स्वतंत्राता संघर्ष में भारत के प्रत्येक कोने से हिन्दी के पक्ष में आंदोलन चलाया गया, आवाज उठाई गई, विकास किया गया।

पश्चिमी भारत में यदि गुजरात पर चर्चा करें तो यहाँ पर महात्मागांधी, राजेन्द्र प्रसाद जैसे नेताओं का योगदान अविस्मरणीय रहा। गांधीजी ने कहा था - " हिन्दी की भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिये xxx हिन्दी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है।"

गांधीजी ने जहाँ दक्षिण भारत के साथ - साथ असम जैसे पूर्वोत्तर के राज्यों में भी हिन्दी प्रचार किया वहीं राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में हिन्दी का समर्थन किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने 'हिन्दी केसरी' पत्र के माध्यम से हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया वहीं इसी राज्य से काका-कालेलकर जैसे नेताओं ने 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', वर्धा से जुड़कर हिन्दी के पक्ष में आवाज उठाई।

दक्षिण भारत में तमिलनाडु में सी.पी. रामास्वामी अय्यर, वैद्यनाथ अय्यर जैसे नेताओं ने, केरल में दामोदर उण्णिजी, कुरूर नीलकंठन नंबूदरिपाद जैसे नेता, ~~केरल~~ कर्नाटक में कर्नाड सदाशिव राव, गंगाधर देशपांडे व आन्ध्रप्रदेश में नारायाचार्य ~~लक्ष्मण~~ लक्ष्मण स्वामी, जंध्याल शिवन्न शास्त्री का योगदान अविस्मरणीय रहा है।

दक्षिण भारत में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समिति' व इसकी शाखाओं ने 1914 से ही हिन्दी प्रचार किया। सी. राजगोपालाचारी ने कहा था -

"हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यह जनतांत्रिक भारत की राजभाषा भी होगी।"

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में बंगाल के नेताओं की भी प्रमुख भूमिका रही। राजा राममोहन राय ने बंगदूत अखबार से (1829); ब्रह्म समाज के प्रमुख नेताओं नवीनचन्द्र राय (ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका), बूदेव मखर्जी (आचार-प्रबंधन पुस्तक) व केशवचन्द्र सेन ने अपने प्रयासों से हिन्दी प्रचार किया। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने कहा था -

"हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के बीच जो ऐक्य-बंधन स्थापित करने में सक्षम होंगे, वही भारत के सच्चे बंधु पुकारे जाने योग्य हैं।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन में भारत के प्रत्येक राज्य का योगदान हिन्दी प्रचार में रहा है।

हालांकि स्वतंत्रता पश्चात् क्षेत्रीय राजनीति के उदय के बाद अनेक राज्यों द्वारा हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापना करने का विरोध किया जाता रहा है किन्तु ये सब विवाद राजनीति प्रेरित अधिक है क्योंकि स्वतंत्रता-पूर्व इन्हीं राज्यों द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग की जाती थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

मध्यकाल में अवधी के विकास का प्रस्थान बिन्दु जो काव्यधारा रही है, वह सूफी काव्यधारा ही है। मुल्ला दाऊद ने अपनी रचना चंदायन, मझन कृत मधुमालती, कुतुबन की मिरगावती एवं मलिक मोहम्मद जायसी की पद्मावत, अखरावट आदि रचनाएँ अवधी के विकास में सहायक सिद्ध हुई। उदाहरण-

"यह तन जारौं छार कै,
कहौं कि पवन उड़ाय।
मकु तेहि मार्ग उड़ि परै,
कन्त धरै जहँ पाँव।" (जायसी)

प्रमुख भाषिक विशेषताएँ

(1) ध्वनिगत विशेषताएँ

(क) व → 'ब' में परिवर्तन
- विश्व - बिस्व।
- वर्षा - बरखा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) 'ण' - 'न' में परिवर्तन।
बाण - बान।

(ग) 'ल' - 'र' में परिवर्तन।
उदा०- यह तन जारौं छार के।

(घ) उकारांतता की प्रवृत्ति।
चंदू, जोगू आदि शब्द।

(ङ) 'क्ष' - 'ख' का परिवर्तन
उदा० रवि ससि 'नखत' दीपहिं ओहि ज्योति।

व्याकरणिक विशेषताएँ

(क) संज्ञा के तीन रूप का प्रचलन।
उदा० - घोरा, घोरवा घोरऊन।
- पुल्लिंग शब्दों में उकारांतता की प्रवृत्ति।

(ख) कारक व्यवस्था :-
- 'हिं' विभक्ति से हर कारक में प्रयोग का प्रयास उदा० -
'राजा गरवहिं बोले नाहिं'
- अन्य स्तर पर परसर्ग :-
कर्म - कूँ, को
करण - सूँ, सैंति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संबंध - केर, केरा का प्रयोग।

(ग) सर्वनामों के स्तर पर जेहि, तेहि जैसे पूर्वी प्रयोगों की बहुलता - उदा०

'जेहि दिन दसन जोति निरमई।

(घ) वचनों के स्तर पर अन, 'न्ह' प्रत्ययों से बहुवचन निर्माण।

उदा० - सखिअन, बीचिन्ह।

(ङ.) क्रिया व्यवस्था :-

वर्तमान काल - 'अ' रूप

उदा० - दहि कोयला भई कंत सनेहा।

भविष्य : 'ब' रूप

भूत - 'ह' रूप - चलहिय आदि।

अन्य विशेषताएँ :- भाषा में लोकतत्वों का सुंदर प्रयोग जैसे - दवगेरा, महावट आदि।

(i) मुहावरों का प्रयोग - उदा०
- हिय फटा

इस प्रकार सूफियों की अवधी अपनी विशेषता में अद्वितीय व अप्रतिम है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) लोकमंगल की अवधारणा को प्रसारित करने में अवधी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा में लिखे गये साहित्य की मात्रा व साहित्यकारों के उद्देश्य से वह भाषा घिसकर 'पोलिश्ड भाषा' हो जाती है अर्थात् वह भाषा किन्हीं निश्चित प्रवृत्तियों को प्रदर्शित करने का माध्यम बन जाती है। सूफी कवियों व तुलसीदास के हाथों में पड़कर तुलसी में गंभीरता व औदात्य आ गया व यह भाषा लोकमंगल की धारणा को प्रसारित करने का माध्यम बन गई।

लोकमंगल से तात्पर्य है जनता के कल्याण के लिये लिखा गया साहित्य। इस सन्दर्भ में 'गोस्वामी तुलसीदास' द्वारा रचित महाकाव्य अद्वितीय है। आचार्य शुक्ल के अनुसार इस महाकाव्य में लोकमंगल अपने शुद्ध रूप में दृष्टिगोचर होता है। इसकी भाषा अवधी होने के कारण लोकमंगल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रचार का माध्यम भी अवधी बन जाती है। उदाहरण के लिये रामचरितमानस के साथ-साथ तुलसी के काव्य में विभिन्न धर्मों, भक्ति-मार्गों, सेम्प्रदायों में 'समन्वय भावना' दिखाई पड़ती है।

- 'अगुनहिं, सगुनहिं नहिं कछु भेदा'।
- 'ज्ञानिहिं प्रभुहिं बिसेसी प्यारा।'

इसी प्रकार 'रामराज्य की धारणा' जो रामचरितमानस का मूल बिन्दु है एक कल्याणकारी व लोकमंगलकारी राज्य का केन्द्र बिन्दु है जैसे-

"रामराज राजत सकल, धर्म पथ नर नारी,
राग, न रोष न द्वेष दुख, सुलभ पदारथ चारि।"

इसी प्रकार निम्न वर्गों व नारी के प्रति जो लोकमंगल का भाव तुलसी ने दिखाया है वह अवधी भाषा में ही रचित है -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"कत विधि सृजी नारी जग माहिं,
पराधीन सपनेहूँ सुख नाहिं।"

इसी प्रकार सूफियों के काव्य में भी साम्प्रदायिकता के विरुद्ध 'गंगा जमुनी तहज़ीब' बनाने के लिये हिन्दू लोक देवता, त्यौहार, नदियों का प्रयोग किया गया है वह लोकमंगल के भाव का ही संप्रेषण है जो मानवीय प्रेम को परलौकिक प्रेम की संज्ञा देता है जैसे -

"मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी
नाहिं ते काह छार एक मूंठी"

इस प्रकार अवधी में वह गुण है जो मध्यकाल में तुलसी व सूफियों के द्वारा लोकमंगल की प्रचारित करने का माध्यम बना जबकि अन्य भाषा जैसे ब्रज आदि केवल शृंगार जैसे तत्वों पर सीमित रही। इसी कारण आचार्य शुक्ल तुलसी के काव्य को 'लोकमंगल की साधनावस्था' का काव्य कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) खड़ी बोली के उदय एवं विकास में कौन-से तत्त्व सक्रिय रहे हैं? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली हिन्दी का 19 वीं शताब्दी में आगमन अत्यन्त तीव्र घटना के रूप में हुआ। इसके पीछे एक कारण जिम्मेदार नहीं है, वरन उस समय की परिस्थितियों ने ऐसे कारणों को जन्म दिया कि आधुनिक काल में खड़ी बोली प्रमुख जन-भाषा के साथ साहित्य-भाषा भी बन गई।

① आधुनिकता का आगमन :- आधुनिकता के आगमन ने भारतीयों को तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक व यथार्थ चिंतन करने को प्रेरित किया। अतः इसके लिये वही भाषा उपयुक्त हो सकती थी जो आधुनिक जीवन के तनाव को धारण करे।

ब्रजभाषा तो सूरदास व रीतिकाल के कवियों के हाथों में पड़कर इतनी संगीतात्मकता से युक्त हो चुकी थी कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उसमें आधुनिकता के भाव व्यक्त नहीं हो सकते थे।

खड़ी बोली में सामासिकता, जन-भाषा, साहित्य की मात्रा व अखिल भारतीय उपस्थिति जैसे गुणों के कारण खड़ी बोली ने ब्रजभाषा से मुख्य भाषा का दर्जा छीन लिया।

② अंग्रेजों का आगमन :- अंग्रेजों द्वारा भारत पर अधिकार करने के पश्चात यह निश्चित था कि वे भारतीयों से व्यवहार जन-भाषा में करें, न कि साहित्यिक भाषा में।

③ ईसाई मिशनरियों का योगदान :- विलियम टॉमस कॉलब्रूक, पॉप चैम्बरलिन व विलियम केरी जैसे व्यक्तियों ने ईसाई धर्म के प्रचारार्थ खड़ी बोली में 'बाइबल' आदि की रचना कर प्रचार किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

④ समाज सुधार आंदोलन :- ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, हिन्दू धर्म सभा जैसी संस्थाओं ने ईसाई मिशनरियों के विरोध व समाज-सुधार के उद्देश्य से प्रचार-प्रसार खड़ी बोली में किया। उदाहरण के लिये :- दयानन्द सरस्वती' ने गुजराती मूल के होने पर भी सत्यार्थ-प्रकाश की रचना खड़ी बोली में की।

⑤ प्रेस की भूमिका :- प्रेस के द्वारा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, लेखों की रचना ने खड़ी बोली के प्रचार को उत्प्रेरित किया। उदाहरण - उदन्त मार्तण्ड, हिन्दी प्रदीप, बालाबोधिनी जैसी पत्रिकाएँ।

⑥ भारतेन्दु व महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका :- जहाँ भारतेन्दु ने अपने मंडल के सदस्यों के साथ स्वयं मिलकर खड़ी बोली में गद्य की विभिन्न विधाओं जैसे - नाटक,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उपन्यास, निबंध की रचनाओं को प्रेरित कर खड़ी बोली को गद्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया वहीं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' के माध्यम से अपने कुशल नेतृत्व व संपादकत्व के साथ खड़ी बोली को पद्य व गद्य की भाषा के रूप में स्थापित किया।

इन्हीं के प्रयासों से श्यामसुंदर दास व किशोरीदास वाजपेयी ने खड़ी बोली के आरम्भिक व्याकरण लिखे।

इस प्रकार खड़ी बोली का उदय व प्रसार क्षणिक घटना न होकर अनेक कारणों का समुच्चय था जिसमें अनेक व्यक्तियों व संस्थानों का योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की लिंग व्यवस्था संस्कृत से उत्पन्न हुई है किन्तु भाषा के सरलीकरण की प्रक्रिया में इसका अपना विकास हुआ है। संस्कृत के तीन लिंगो के बजाय हिन्दी में केवल दो ही लिंग है। नागर अपभ्रंश वह अंतिम अवस्था थी जहाँ नपुसकलिंग विद्यमान था।

हिन्दी की लिंग व्यवस्था पूर्णत: वैज्ञानिक न होकर लोक प्रयोगों के प्रभावों से निर्मित हुई है।

उदाहरण के लिये विकास की प्रक्रिया में आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में डाल दिये गये। (इकारान्त व ईकारान्त भी) जबकि अकारांत शब्दों को पुलिंग रहने दिया गया।

उदाहरण - गंगा, रीति, नदी (स्त्रीलिंग)

- कमल, पंकज (पुलिंग)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

लिंग निर्धारण के नियम

हिन्दी में स्त्रीलिंग के लिये निम्न 7 प्रत्ययों का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। जैसे

ई - लड़की
अन - मालन
इन - मालिन
नी - शेरनी
आइन - ठकुराइन आदि।

इसी प्रकार 'आकारान्त' पुल्लिंग शब्दों में 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है जैसे -

लड़का - लड़की।

अन्य नियम

आ - ई - छोरा - छोरी।
इ - इन - माली - मालिन
अ - नी - शेर - शेरनी
अ - आइन - ठाकुर - ठकुराइन

इस प्रकार हिन्दी की लिंग संरचना मुख्यतः संस्कृत से व साथ ही लोक - प्रयोगों से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्मित है।

अन्य विशेषताएँ

- केवल आकारान्त विशेषण विकारी होते हैं जैसे - काला - काली।

समस्याएँ

① लिंग-निरपेक्ष नामों के लिंग निर्धारण में समस्याएँ जैसे - दही, वायु, पहाड़ों के नाम आदि।

② पदनामों के लिंग निर्धारण में समस्या जैसे - राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि।

③ विदेशी शब्दों के लिंग निर्धारण में समस्या।

④ पुल्लिंग में क्रिया ~~लिंग परिवर्तन~~ वचन परिवर्तन में परिवर्तित होती है जबकि स्त्रीलिंग में नहीं जैसे -
लड़के जा रहे हैं - लड़का जा रहा है।
लड़की जा रही है - लड़कियाँ जा रही हैं।

अतः समस्याओं के बावजूद हिन्दी की लिंग संरचना प्रयोगों के सन्दर्भ में धीरे-धीरे वस्तुनिष्ठ हो रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिंदी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों के योगदान का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की बोली है जो कौरवी भाषा के दक्षिणी भाषाओं के मेल से उत्पन्न हुई है।

इस क्रिया में अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिणी अभियानों, मुहम्मद बिन तुगलक के राजधानी स्थानान्तरण व दक्षिण में दक्कन के क्षेत्र के प्रमुख राजवंशों के योगदान का प्रमुख महत्व है। आदिलशाही वंश के शासकों ने अहमदनगर व आस-पास के क्षेत्र में दक्खिनी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आदिलशाही शासकों की भूमिका सर्वप्रथम इस कड़ी में इब्राहिम आदिलशाह प्रथम का नाम लिया जा सकता है। उन्होंने -

(क) शिया के बजाय सुन्नी को राजधर्म बनाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ईरानी प्रभाव कम हुआ।
(ग) दक्खिनी के विकास को प्रोत्साहन दिया।

प्रमुख कवि :- शाह बुरहानुद्दीन 'जानम'
शाह शमसुलइश्शाक।

इब्राहिम आदिलशाह के उत्तराधिकारी 'अली आदिलशाह' भी विद्या व्यसनी व कला प्रेमी था, जिसने दक्खिनी को प्रोत्साहित किया।

प्रमुख उदाहरण :- बुरहानुद्दीन 'जानम' की प्रमुख रचना 'इर्शादनामा' है जो उन्होंने अपने पिता मीरांजी की प्रशंसा में लिखी है।

"सिफत कर हूं अपना पीर
जिस से रोशन हुए जमीर
दहों जग में मुंज मीत वही
समुरु ने मन मीत वही'।"

इसी कड़ी में अगला नाम इब्राहिम आदिलशाह का है जिन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

द्वारा अवधी को विकसित किया। जैसे-

"लिखत बैठ जारी शबी गहि गाह गरब गुरूर
भये न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।"

(ग्रन्थ - नवरस)

अन्य कवि

गद्य रचना - मिर्जा व हाशमी

मर्सियों की रचना - अमीनुद्दीन अली मौज्जम।

भाषा के स्तर पर

- महाप्राण का अल्पप्राणीकरण किया।
  - मुझे - मुजे
- 'द्वारा' प्रत्यय लगाकर वाक्यों का निर्माण - समझनद्वारा आदि।

इस प्रकार हर स्तर पर दक्खिनी के विकास में आदिलशाही शासकों ने अपना योगदान किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(क) दिनकर की कविता में ओज

रामधारी सिंह दिनकर मुख्यतः ओज के कवि माने जाते हैं। मूलतः अपने स्वभाव के कारण एवं अंशतः विचारधारा के प्रभाव (मार्क्सवाद का कुछ प्रभाव) एवं मंचीय कविता से जुड़ाव के कारण उनकी कविताओं में ओज तत्व चरम पर है जैसे -

"छीनता हो स्वत्व कोई और तू,
त्याग तप से काम ले यह पाप है,
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे,
तेरी तरफ बढ़ रहा जो हाथ है।"

दिनकर की कविताओं जैसे कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, हुंकार, प्रतीक्षा, परशुराम की प्रतीक्षा सभी में ओज तत्व किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

राष्ट्रकवि होने के नाते दिनकर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की कविताएँ जन सामान्य से जुड़ती है। अत! जनसामान्य में जोश व जागृति के लिये ओज तत्व प्रमुख हो जाता है जैसे -

"सदियों की ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
~~सिंहा~~ सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"

इस प्रकार दिनकर की कविताएँ ओज तत्व से ओत-प्रोत हैं व जनता में जागृति, संघर्ष चेतना व जोश जगाने का निर्वाह पर्याप्त मात्रा में करती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा में जहाँ बिहारी, भिखारीदास जैसे कवि आते हैं वो रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद, ठाकुर, बोधा जैसे कवि। दोनों में सुस्पष्ट अंतर यह है कि रीतिबद्ध कवि जहाँ लक्षण-ग्रन्थों की परिपाटी पर रचना करते हैं वहीं ~~रीतिसिद्ध~~ रीतिमुक्त कवि अपनी भावनाओं के आधार पर काव्य रचना करते हैं।

शृंगारिकता के आधार पर अंतर

रीतिबद्ध	रीतिमुक्त
1. मूलतः दैहिक शृंगार पर बल उदा० पद्माकर	शृंगार में देह की नहीं भावनाओं की भिन्नता है। उदा० घनानंद
2. मूलतः संयोग पक्ष पर अधिक बल	वियोग पक्ष पर अधिक बल
3. वियोग पक्ष का वर्णन	वियोग पक्ष का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तो है किन्तु वह कृत्रिम, यांत्रिक व काव्य-चमत्कार करने का प्रयास मात्र है	वर्णन अत्यन्त मार्मिक, भावनामूलक व उदात्त है।

उदाहरण

"गिलगिलि गिल में गलीचा है,
चाँदनी है चिक है चिरागन की माला है
कहै पद्माकर ज्यों गजक गिजा है सजी
सेज है सुराही है सुरा है और प्याला है।"
(रीतिबद्ध)

"अति सूधो सनेह से मार्ग है
जहँ नेकु सयानप बाँक नहिं"
(रीतिमुक्त)

इस प्रकार दोनों का श्रृंगार विवेचन उद्देश्य व भावनाओं के आधार पर भिन्नता लिये हुए है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान

हिन्दी साहित्येतिहास परंपरा में नाभादास ने 'भक्तमाल' की रचना 15वीं-16वीं शताब्दी में की थी। यह ग्रन्थ वृत्त संग्रह का उदाहरण है।

आधुनिक साहित्येतिहास कसौटियों की तुलना में भले ही खरा न उतरे किन्तु नाभादास का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्येतिहास का प्रस्थान-बिन्दु साबित होता है।

विशेषताएँ

① विभिन्न कवियों जैसे कबीर, मीरा के बारे में वर्णन कर जनता में उनके प्रति श्रद्धा जगाने का प्रयास।

उदा०

"कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षड्दर्शनी।"
(कबीर के बारे में)

"निर्भीक, अति निडर रसिक जस रसना गायो।" (मीरा के बारे में)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

② कवियों के जीवन संरक्षण को प्रस्तुत करने की प्रकृति।

③ विभिन्न कवियों के अलौकिक कारनामों का वर्णन।

इस प्रकार नाभादास का भक्तमाल हमें मध्यकाल के कवियों जैसे नानक, कबीर आदि की प्रमुख जानकारी देता है। साथ ही वृत्त संग्रह के प्रमुख ग्रन्थ होने के नाते साहित्येतिहास में हमारी जानकारी को विस्तृत भी बनाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केशवः कठिन काव्य के प्रेत

केशवदास पर विभिन्न आलोचकों द्वारा आरोप लगाया जाता है कि उनका काव्य अत्यन्त कठिन है। साथ ही उनके काव्य में सहजता का अभाव है।

यदि इस आलोचना के कारणों पर विचार करें तो प्रथम कारण यह हो सकता है कि केशव अपने काव्य से हर विधा को साध लेना चाहते थे जैसे कविप्रिया से अलंकार विवेचन, रसिकप्रिया से रस-विवेचन, जहाँगीर जसचन्द्रिका से इतिहास का दर्जा आदि।

दूसरे कारणों में इनके काव्य में पद-न्यूनता व वाक्य-न्यूनता के दर्शन मिल जाते हैं जैसे-

"सा। श्री। री। धौ
राम। नाम। सत्य। धाम"

अन्य स्तरों पर केशव ने बहुछन्द कल्पना द्वारा काव्य में अत्यन्त जटिल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

~~छंद~~ छंदो का प्रयोग किया है। आचार्य शुक्ल के अनुसार इसके कारण भाषा की लय अपेक्षित हुई है।

अलंकारों के अत्यधिक प्रयोग ने भी केशव के काव्य को कठिन बनाया है कई जगह चमत्कारों के मोह में कल्पना को बेपर उड़ान दी गई है, जैसे-

"पद्यौ गगन तरु धाय
दिनकर वानर अरुण मुख।"

अन्ततः यही कहा जा सकता है कि केशव सुसंस्कृत व संस्कृत के प्रकाण्ड पंडितों के परिवार से आते थे। इसी कारण उन्होंने जटिल भाषा का प्रयोग कर काव्य को कठिन बना दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) विद्यापति की राधा

विद्यापति ने अपनी रचना 'पदावली' के माध्यम से जयदेव के 'गीतगोविन्द' की परंपरा में भगवान की शृंगार समन्वित भक्ति के साथ-साथ राधा को भी नया व्यक्तित्व प्रदान किया है।

राधा का सौन्दर्य अपरूप का सौन्दर्य है। सौन्दर्य के सारे उपादान विद्यापति ने प्रकृति के माध्यम से इकट्ठे किये हैं जैसे -

"जहँ जहँ जुग पग धरई
तहँ तहँ सरोरुह झरई।
जहँ जहँ झलकत अंग
तहँ तहँ बिजुरी तरँग।"

राधा का बाह्य पक्ष ही नहीं बल्कि आंतरिक मन भी सुंदर है। वह कृष्ण के रूप को जन्म-भर निहारना चाहती है -

"जन्म अवधि भर रूप निहारल
नयन न तिरपित भेल।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राधा के व्यक्तित्व को विद्यापति ने इतना मजबूत किया है कि उसके वियोग में कृष्ण भी वियोग में है -

"राहि हम दूर रहत मधुरापुर
एतहु सहए परान।"

अन्ततः विद्यापति की राधा किशोरी है। जहाँ जयदेव की राधा युवती थी तो सूरदास की राधा सात वर्ष की बालिका है।

अतः विद्यापति ने राधा को नया व्यक्तित्व प्रदान किया जो आगे चलकर हरिऔध जी के 'प्रियप्रवास' व धर्मवीर भारती की 'कनुप्रिया' को प्रभावित कर पाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पृथ्वीराज रासो के महाकाव्यत्व पर यदि विचार करें तो पारंपरिक महाकाव्यत्व कसौटियों पर चंद खरा उतरते हैं जैसे - अंगीरस, 8 सर्गों से अधिक सर्गों का होना, पुरुषार्थों की योजना, मंगलाचरण आदि। चंद ने 68 समयों के साथ-साथ 69 छंदों का प्रयोग किया है। साथ ही वीर रस को अंगीरस के रूप में स्वीकार करना परंपरागत कसौटि कसौटी पर इसे खरा उतारता है।

डॉ० नगेन्द्र द्वारा दी गई महाकाव्य की आधुनिक कसौटियों पर कसने पर भी पृथ्वीराज रासो खरा उतरता है। उदात्त कथानक के रूप में उस समय के अनुरूप युद्धों की बहुलता है। कथानक के अन्त में नाटकीयता व द्वन्द्व है। चरित्रों के स्तर पर कुछ हिचकिचाहट के साथ वीरत्व, साहस जैसे गुणों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की उपस्थिति पृथ्वीराज को उदात्त चरित्र घोषित कर देती है।

उदात्त शैली के स्तर पर चंदबरदाई चमत्कृत करते हैं। उन्होंने 69 छंदों का प्रयोग किया है। इसी कारण नामवर सिंह ने चंद को 'छंदों का राजा' कहा है।

भावों के स्तर पर पृथ्वीराज का अंधे होने के बावजूद गौरी को तीर-मारना वीरत्व का परिचायक है।

उदात्त कार्य की दृष्टि से भी पृथ्वी-राज रासो महाकाव्य सिद्ध होता है क्योंकि राजपूती मानसिकता की दृष्टि से इसका अन्त अत्यन्त उदात्त है।

इन्हीं गुणों के कारण आचार्य शुक्ल ने कहा है- "चंद को हिन्दी का पहला महाकवि माना जा सकता है व इनका पृथ्वीराज रासो हिन्दी का पहला महाकाव्य है"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चंद्रगुप्त नाटक में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का अनावरण कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद नाटकों में इतिहास का प्रयोग उपयोगितावादी नज़रिये से करते हैं, नाकि नाटकों के माध्यम से जनता की राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को जागृत किया जा सके। चन्द्रगुप्त में भी प्रसाद का यही उद्देश्य है।

① राष्ट्र के प्रति सम्मान भाव : प्रसाद पश्चिमी संस्कृति के समक्ष भारतीय दया, करुणा, उदारता जैसे मूल्यों की विजय दर्शाते हैं। कार्नेलिया कहती है-

"अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है। यह भारत मानवता की भूमि है।"

② क्षेत्रवाद के बजाय अखण्ड भारत की परिकल्पना की स्थापना वे चाणक्य के निम्न कथन के माध्यम से करते हैं।

"तुम ~~मगध~~ मागध हो और यह मालव! यही तुम्हारे मान का अवसान है ना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मागध और मालव को भूलकर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगे तभी वह तुम्हें मिलेगा।"

③ सांप्रदायिकता का विरोध :- बौद्ध व ब्राह्मण धर्म की टकराहट में समन्वय कर प्रसाद सांप्रदायिकता पर कटाक्ष करते हैं। 'जनता धर्म की ओट में नचाई जा रही है'; एवं यवन आक्रमणकारी बौद्ध व ब्राह्मणों में भेद नहीं करेंगे' जैसे वाक्यों से आधुनिक सांप्रदायिकता का विरोध प्रसाद ने किया है।

④ अन्ततः विदेशी पात्रों से प्रशंसा कराकर प्रसाद ने भारतीयों की हीनता ग्रन्थि दूर करने का भी प्रयास किया है। कार्नेलिया का गीत-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"

इस प्रकार राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में यह नाटक अद्वितीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास का अनुशीलन कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री-विमर्श साहित्य की वह विचारधारा है जो यह मानती है कि 'संवेदना' चाहे कितनी ही गहरी क्यों न हो, यह 'स्वयं वेदना' के समक्ष नहीं हो सकती।

हिन्दी उपन्यासों में भी स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री-विमर्श को दिशा मिली। यूँ तो पहले भी प्रेमचन्द (निर्मला), जैनेन्द्र (परख, सुनीता), यशपाल (दिव्या) जैसे उपन्यासकार स्त्री समस्याओं पर लिख चुके थे किन्तु इस समय स्त्रियों ने स्वयं अपनी समस्याओं पर लिखना शुरू किया।

प्रमुख उपन्यासकार व उपन्यास

कृष्णा सोबती - 'सूरजमुखी अंधेरे के'
प्रभा खेतान - 'छिन्नमस्ता'
मृदुला गर्ग - कठगुलाब, चितकोबरा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चित्रा मुद्‌गल = आवाँ
मन्नू भंडारी = आपका बंटी
मैत्रेयी पुष्पा - इदन्नमम।

इस प्रकार विभिन्न उपन्यासों के द्वारा महिला साहित्यकारों ने विभिन्न समस्याओं को उठाया है जैसे कृष्णा सोबती ने यौन नैतिकता पर प्रश्न उठाये हैं तो मृदुला गर्ग का उपन्यास कठगुलाब मारवाड़ी समाज की 'रेशम' की दुर्दशा का वर्णन करता हैं।

इस प्रकार संवेदना व प्रभाव दोनों के स्तर पर स्त्री-विमर्श ने हिंदी-उपन्यास धारा को नई दिशा दी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाव्य का समय राजनीतिक स्थिरता का समय था। अतः इस समय आवश्यक ही है कि ललित कलाओं का भी विकास साहित्य के साथ-साथ हो।

आचार्य रामस्वरूप द्विवेदी ने रीतिकालीन साहित्य के साथ ललित कलाओं के संबंधों की पड़ताल की है। यह संबंध दो स्तरों पर है

मुहम्मदशाह का दरबार हो या मानसिंह (ग्वालियर) के शासन में विकसित संगीत शैलियाँ - सभी का प्रभाव रीतिकालीन कविता पर पड़ता है। काव्यों में संगीत की रागों के अनुरूप अर्थ व विराम योजना है -

"भरि रही भनक भनक। तार। ताननि की। तनक तनक तामें। झनक चुरीन की।"

चित्रकला के संबंध में भी शाहजहाँ के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शासनकाल में सुनहरी पानी के प्रयोग द्वारा चित्रों में चमक का प्रयास किया गया। वैसा ही प्रभाव बिहारी के निम्न दोहे में मिलता है।

"अंग- अंग नग जगमगति
दीपशिखा सी देह।"

इसी प्रकार प्रसिद्ध कलाशास्त्री ने आश्चर्य जताया है कि (ग्लास (पेंटिंग) में संपूर्ण भारत में रागमाला के रूप जैसे चित्रण हुए हैं। ऐसा ही उदाहरण संगीत के संबंध में दिखाई पड़ता है क्योंकि समान ध्वनि में समान चित्रों को बनाने की क्षमता होती है। रीतिकालीन कविता का बिम्बात्मक व अनुभाव- केन्द्रित होना इसी बात का परिचायक है।

अतः विभिन्न कलाओं का अनूठा संबंध रीतिकाल के साहित्य में नज़र आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा सिग्मंड फ्रॉयड, वॉमस एडलर व कार्ल-युंग के सिद्धान्तों पर आधारित है जो यह मानते हैं कि व्यक्ति के मन का अध्ययन 'चेतन' स्तर पर नहीं करना चाहिये बल्कि 'अवचेतन' या अचेतन स्तर पर करना चाहिये। साथ ही उनके अनुसार लिबिडो या 'काम चेतना' व्यक्ति की प्रमुख समस्या है।

हिन्दी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में भी इन्हीं सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जैसे -

जैनेन्द्र - फ्रॉयड व Jung का प्रभाव
- परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी आदि उपन्यास।

अज्ञेय :- फ्रॉयड के साथ-साथ सार्त्र व डी.एच. लॉरेंस का प्रभाव।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

- 'शेखर एक जीवनी'
'नदी के द्वीप'

इलाचन्द्र जोशी - सिद्धान्त पक्ष हावी
- जिप्सी, सन्यासी उपन्यास।

डॉ० देवराज - 'अजय की डायरी'

विशेषताएँ

(i) घटनाएँ कम, चिंतन-मनन पर अधिक बल।

(ii) भाषा प्रतीकात्मक - उदा.
"वो देखो पतंग कितना ऊँचा उड़ जाती है। मैं पतंग होना चाहती हूँ।" (त्यागपत्र)

(iii) अन्तर्मुखी रुझान।

(iv) नैतिक मानकों के प्रति विद्रोह - शेखर एक जीवनी में शेखर व शशि का प्रेम नैतिक वर्जनाओं को तोड़ता है।

अतः इस विचारधारा ने हिन्दी उपन्यास को एक नई दिशा दी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation